संस्कृत साहित्य

का

इतिहास

संस्कृत-साहित्य का इतिहास

(संशोधित तथा संवर्धित)

लेखक—

हंसराज अग्रवाल एम. ए., पी. ई. एस.,

फ़ुल्लर ऐग्ज़िबिश्नर और गोल्ड मैडलिस्ट, मैम्बर बोर्ड आव् स्टडीज़ इन संस्कृत, ऐडिडमैम्बर ओरियएटल फ़ैक्ल्टी पंजाब युनिवर्सिटी, अध्यक्ष संस्कृत हिन्दी विभाग, गवर्नमेंट कालेज, लुध्याना

डा. लक्ष्मणस्वरूप एम. ए., डी. फ़िल. (आक्सन)

आफिसर डि. ऐकेडेमि (फ्रांस). प्रोफेसर आव् संस्कृत, पंजाब युनिवर्सिटी लाहौर द्वारा लिखित पूर्व शब्द सहित।

प्रकाशक—

राजहंस प्रकाशन

सदर बाजार,

दिल्ली

मूल्य—

तृतीयावृत्ति] विद्यार्थी संस्करण ४।।) [१६५०

लायब्रेरी संस्करण ७।।)

पहला संस्करण .. १९४२
दूसरा संस्करण ... १९४७
तीसरा संस्करण . १९५०

Printed by Amar Chand at the Rajhans Press, Sadar Bazar Delhi, and published by Rajhans Prakashan, Sadar Bazar, Delhi.

समर्पण

हिन्दी साहित्य के अनन्य प्रेमी, राष्ट्र-भाषा के
निःस्वार्थ भक्त, देवनागरी लिपि के परम
उपासक, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के
भूतपूर्व प्रधान, अलाहाबाद युनिवर्सिटी
के भूतपूर्व वाईस-चान्सलर, विद्वानों
के परम पूज्य, श्रीयुत पंडितप्रवर
डाक्टर 'अमरनाथ झा'
के कर कमलों में
सादर समर्पित

पूर्व-शब्द

संस्कृत-साहित्य विशाल और अनेकांगी है। जितने काल तक इसके साहित्य का निर्माण होता रहा है उतने काल तक जगत् में किसी अन्य साहित्य का नहीं। मौलिक मूल्य में यह किसी से दूसरे नम्बर पर नहीं है। इतिहास को लेकर ही संस्कृत-साहित्य त्रुटि-पूर्ण समझा जाता है। राजनीतिक इतिहास के सम्बन्ध से तो यह तथा-कथित त्रुटि बिल्कुल भी सिद्ध नहीं होती। राजतरंगिणी के ख्यात-नामा लेखक कल्हण ने लिखा है कि मैंने राजाओं का इतिहास लिखने के लिए अपने से पहले के ग्यारह इतिहास-ग्रन्थ देखे हैं और मैंने राजकीय लेख-संग्रहालयों में अनेक ऐसे इतिहास-ग्रन्थ देखे हैं जिन्हें कीड़ों ने खा डाला है, अतः अपाठ्य होने के कारण वे पूर्णतया उपयोग में नहीं लाए जा सके हैं। कल्हण के इस कथन से बिल्कुल स्पष्ट है कि संस्कृत में इतिहास-ग्रन्थ लिखे जाते थे।

परन्तु यदि साहित्य के इतिहास को लेकर देखें तो कहना पड़ेगा कि कोई ऐसा प्रमाण नहीं मिलता है जिससे यह दिखाया जा सके कि कभी किसी भी भारतीय भाषा में संस्कृत का इतिहास लिखा गया था। यह कला आधुनिक उपज है और हमारे देश में इसका प्रचार करने वाले यूरोप निवासी भारत-भाषा-शास्त्री हैं। संस्कृत-साहित्य के इतिहास अधिकतर यूरोप और अमेरिकन विद्वानों ने ही लिखे हैं। परन्तु यह बात तो नितान्त स्पष्ट है कि विदेशी लोग चाहे कितने बहुज्ञ हों, वे सभ्यता, संस्कृति, दर्शन, कला और जीवन-दृष्टि की दृष्टि से अत्यन्त भिन्न जाति के साहित्य की अन्तरात्मा को पूर्ण अभिप्रशंसा करने या गहरी था

लेने में असमर्थ हो रहेंगे। किसी जाति का साहित्य उसकी रूढ़ि-परम्परा की, परिवेष्टनों की, भौगोलिक स्थितियों की, जलवायु से सम्बद्ध अवस्थाओं की और राजनैतिक संस्थाओं की संयुक्त प्रसूति होता है। अतः किसी जाति के साहित्य को ठीक-ठीक व्याख्या करना किसी भी विदेशी के लिए दुस्साध्य कार्य है। अब समय है कि स्वयं भारतीय अपने साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ लिखते और उसके (अर्थात् साहित्य के) अन्दर छुपी हुई आत्मा के स्वरूप का दर्शन स्वयं कराते। यही एक कारण है कि मैं श्रीयुत हंसराज अग्रवाल एम० ए० द्वारा लिखित संस्कृत साहित्य के इस इतिहास का स्वागत करता हूँ। श्रीयुत अग्रवाल एक यशस्वी विद्वान् है। उसने फुल्ला छात्रवृत्ति प्राप्त की थी और उसे विश्वविद्यालय के स्वर्ण पदकों से सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त है। यह आते हुए समय की शुभ सूचना है कि भारतीयों ने अपने साहित्य के इतिहास में अभिरुचि दिखलानी प्रारम्भ कर दी है। मेरा विचार है कि संस्कृत साहित्य का इतिहास लिखने वाले बहुत थोड़े भारतीय हैं, और पञ्जाब में तो श्रीयुत अग्रवाल से पहला कोई है ही नहीं। इन दिनों बी० ए० के छात्रों की आवश्यकता पूर्ण करने वाला, और संस्कृत साहित्य के अध्ययन में उनकी सहायता करने वाला कोई ग्रन्थ नहीं है, क्योंकि संस्कृत के उपलभ्यमान इतिहास ग्रन्थों में से अधिक ग्रन्थ उनकी योग्यता से बाहर के हैं। यह ग्रन्थ बी० ए० श्रेणी के ही छात्रों की आवश्यकता को पूर्ण करने के विशेष प्रयोजन से लिखा गया है। लेखक ने बड़ा परिश्रम करके यह इतिहास लिखा है और मुझे विश्वास है कि यह जिनके लिये लिखा गया है उनकी आवश्यकताओं को बड़ी अच्छी तरह पूर्ण करेगा।

लक्ष्मण स्वरूप

(एम० ए०, डी० फिल०, आफ़िसर डी ऐकेडेमी)

प्रथम संस्करण का आमुख

संस्कृत-साहित्य का महत्त्व बहुत बड़ा है (देखो पृष्ठ १-५) । हिन्दी भाषा का संस्कृत से घनिष्ठ सम्बन्ध है, वही सम्बन्ध है जो कि एक लड़की का अपनी माता से होता है (देखो पृष्ठ ११-१५)। संस्कृत-साहित्य से सम्बद्ध इतिहास का हिन्दी में अभाव कुछ खलता सा था, अतः मैं यह प्रयास संस्कृत-साहित्य से अनुराग रखने वाले हिन्दी प्रेमियों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

इस ग्रन्थ को लिखते समय मेरा विशेष लक्ष्य इस विषय को संस्कृत साहित्य के प्रेमियों के लिए अधिक सुगम और अधिक आकर्षक बनाने की ओर रहा है । इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मैंने विशेषतया विश्लेषण शैली का सहारा लिया है । उदाहरणार्थ, मैंने यह अधिक अच्छा समझा है कि कविकुलगुरु कालिदास का वर्णन महाकाव्य प्रणेता के या नाटककार के या संगीत-काव्य कर्ता के रूप में तीन भिन्न-भिन्न स्थानों पर न दे कर एक ही स्थान पर दे दिया जाए । जहां-जहां सम्भव हुआ है आधुनिक से आधुनिक अनुसन्धानों के फलों का समावेश कर दिया है । पाश्चात्य दृष्टि कोण का अन्धा-धुन्ध अनुकरण न कर के मैंने पूर्वीय दृष्टि-कोण का भी पूरा-पूरा ध्यान रक्खा है ।

मैं उन भिन्न-भिन्न प्रामाणिक लेखकों का अत्यन्त कृतज्ञ हूं—जिनमें से कुछ उल्लेखनीय ये हैं,—मैक्डॉनल, कीथ, विंटरनिट्ज, पीटरसन,

टामस, हौपकिन्स, रैप्सन, पार्जिटर, और ऐजरटन—जिनकी कृतियों को मैंने इस ग्रन्थ के लिखते समय बार-बार देखा है और पाद-टिप्पणियों में प्रमाणतया जिनका उल्लेख किया है। अपने पूज्य अध्यापक डा० लक्ष्मणस्वरूप एम०ए०, डी० फिल०, आफ़िसर डि ऐकेडेमि फ्रांस, संस्कृत प्रोफ़ैसर पञ्जाब यूनिवर्सिटी लाहौर को मैं विशेषत: धन्यवाद देता हूं, जिनके चरण कमलों में बैठकर मैंने वह बहुत कुछ सीखा जो इस ग्रन्थ में भरा हुआ है। इस ग्रन्थ के लिए पूर्व शब्द लिखने में उन्हों ने जो कष्ट सहन किया है, मैं उसके लिए भी उनका बड़ा ऋणी हूँ।

इस पुस्तक के लिखने में मुझे अपने परम मित्र श्रीयुत श्रुतिकान्त शर्मा शास्त्री, एम० ए० साहित्याचार्य से विशेष सहायता मिली है। उनके अनथक प्रयत्नों के बिना इस पुस्तक को हिन्दी जगत् के सम्मुख इतनी जल्दी प्रस्तुत करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होता, अत: मैं उनका भी बड़ा आभारी हूँ।

आशा है कि हिन्दी जगत् इस अभाव-पूर्ति का समुचित आदर करेगा।

विद्वानों का सेवक

हंसराज अग्रवाल